Vol 5 Issue 10 July 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue - 10 | July - 2016

Review Of Research

टेलीविजन धारावाहिक 'मैला आंचल' में परिवेश और आंचलिकता की संप्रेषणीयता

डॉ. उमेश कुमार पाठक
संचार एवं पत्रकारिता विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय क्षेत्रीय केंद्र, खानियारा, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश.

शोध सार
अपनी अंतर्वस्तु के आलोक में टेलीविजन धारावाहिक 'मैला आंचल' किसी व्यक्ति विशेष की विशिष्ट दृश्यांकन न होकर एक आंचलिक परिवेश की लगभग संपूर्ण प्रस्तुति है। कथा साहित्य पर आधारित टेलीविजन धारावाहिकों के लिए यह स्थिति बहुत आवश्यक और लगभग एक शर्त्त जैसी है। इसमें परिवेश का जीवंत दृश्यांकन व मूल कथा के अनुरूप उसका प्रस्तुतीकरण ही निर्माता–निर्देशक का मुख्य ध्येय रहा है। यह सही है कि बिना व्यक्ति समाज और व्यक्ति चरित्रों के सामाजिक परिवेश के प्रस्तुतीकरण की बात कहना बहुत असंगत लगता है। और, यही कारण है कि धारावाहिक 'मैला आंचल' में दृश्य ही समाज भी है और अनेक बहुरंगी, विविधवर्गी व्यक्ति चरित्र भी है, लेकिन ये सब दृश्यांकन कला के उन बिन्दुओं के समान हैं जिनको परस्पर मिलाने से एक संपूर्ण कथावस्तु का स्वरूप स्पष्ट होता है। धारावाहिक 'मैला आंचल' के लगभग हरेक एपिसोड में दृश्य ही संदर्भ व परिवेश हैं जिसको सहानुभूति और प्रतिबद्धता के साथ निर्माता–निर्देशक ने व्यक्ति चरित्रों, संस्कारों, संस्कृति, परम्पराओं, विश्वासों और वातावरण के माध्यम से प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। यह परिवेश संक्रमणकालीन भारत के ग्रामीण अंचल का है। अब जहां की मिट्टी में परिवर्तन और विकास के अंकुर फुट रहे हैं। फिर भी निर्देशक ने जिस अंचल के निहितार्थ औपन्यासिक कथा को मूल आधार व कथावस्तु के रूप में चुना है, उसे ठेठ देहात कहा जा सकता है। उदाहरण के तौर पर गांव के लोग बड़े सीधे दीखते हैं, सीधे यानी अनपढ़, अज्ञानी और अविश्वासी, हालांकि, सांसारिक बुद्धि में वे शहरी लोगों को भी दिन में बार बार ठग सकने की क्षमता रखते हैं।

कुंजी शब्दः दृश्य–श्रव्य माध्यम, संप्रेषणीयता, दृश्यांकन, आंचलिकता, यथार्थवादी, कथानक, दृश्य भाषा, शैली संयोजन.

भूमिका

टेलीविजन धारावाहिक दृश्य–श्रव्य तकनीक आधारित कला है। गीत, संगीत, नृत्य, कविता, कहानी, नाटक, फोटोग्राफी, संपादन, चित्रकला आदि सभी ललित कलाओं का समावेश इस विधा में स्वतः हो जाता है। इनका समग्र समन्वयन और प्रभाव ही एक अच्छे, सफल, सार्थक और गंभीर धारावाहिक का निर्माण करता है। हालांकि, इसके विभिन्न प्रयोगों में विभिन्न विधाओं के विशेषज्ञों का योगदान होने के बावजूद यह अंततः निर्देशक का माध्यम है। टेलीविजन धारावाहिक असल में विभिन्न कलाओं का समुच्चय है। कहना गलत न होगा कि

इसके अंतर्गत एक प्रकार से सभी कलाओं के व्यंजनों से सजी थाली का आस्वाद प्राप्त होता है। मशहूर पटकथा लेखक प्रो. असगर वजाहत के अनुसार इसलिए निर्माता–निर्देशक को सभी कलाओं में निपुण नहीं तो कम–से–कम गहरा अध्येता अवश्य होना चाहिए। विवेचनात्मक संदर्भ में साहित्य, संस्कृति, कला, समाज के साथ हमेशा चिंतनशील यात्रा करने वाले निर्देशकों की दृश्य–श्रव्य प्रस्तुति के रूप में टेलीविजन धारावाहिक ज्यादा उल्लेखनीय रहा है। यह सिनेमा और टेलीविजन धारावाहिक के साथ अन्य कलारूपों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। इस संदर्भ में टेलीविजन धारावाहिक 'मैला आंचल' में परिवेश और आंचलिकता की संप्रेषणीयता एक गहन विवेचन का प्रयास सामाजिक होने के साथ–साथ अकादमिक भी है। फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखित उपन्यास 'मैला आंचल' पर आधारित टेलीविजन धारावाहिक 'मैला आंचल' का प्रसारण 1990–91 में दूरदर्शन पर हो चुका है। निर्माता–निदेशक अशोक तलवार ने धारावाहिक निर्माण की प्रक्रिया में उपन्यास के मूल पाठ को यथासंभव अक्षुण्ण बनाने की भरपूर कोशिश की है।

प्रस्तुति एवं विश्लेषण

मूल औपन्यासिक कथा के अनुरूप ही मेरीगंज मलेरिया और काला बाजार का क्रीड़ा स्थल है। फिर भी लोग स्वस्थ और सबल हैं जैसा कि उपन्यास में वर्णित है–'हड्डियों पर कलापूर्ण ढंग से तराशकर बैठाए गए जैसे मांस का उभार कभी सूखा नहीं, ताजे फूलों की पंखुड़ियों जैसे उनके ओठ कभी जर्द नहीं हुए और न किसी संथाल के पेट में कभी पिल्ही बढ़ जाने की बात ही सुनी गई'। नायक डॉक्टर प्रशान्त की दृष्टि ने इस अंचल के लोगों के जीवन के दोनों पहलुओं का निकटता से परिचय प्राप्त किया है। उसने यहां के भयातुर इन्सानों को देखा है, बीमार और निराश लोगों की आंखों की भाषा को समझने की चेष्टा की है। उसे मध्यवित्त किसानों की हवेली और बेजमीन मजदूरों की झोंपड़ियों में जाने का अवसर या दुर्भाग्य प्राप्त हुआ है। रोगियों को देखकर उठते समय, छींके पर टंगी हुई खाली मिट्टी की हांड़ियों से उसका सिर टकराया है। सात महीने के बच्चे को बथुआ और पाट के साग पर पलते देखा है। ''.... गरीबी, गन्दगी और जलाहत से भरी हुई दुनिया में भी सुन्दरता जन्म लेती है। किशोर–किशोरियों और युवतियों के चेहरे पर एक विशेषता देखी है उसने।''

''.....किन्तु इतना होते हुए भी यहां की धरती माता स्वर्णचला है। गेहूं की सुनहली बालियों से भरे हुए खेतों में पूरवैया हवा लहरें पैदा करती हैं। सारे गांव के लोग खेतों में हैं। मानो सोने की नदी में, कमर भर सुनहले पानी में सारे गांव के लोग क्रीड़ा कर रहे हैं। .....सुनहरी लहरें। ताड़ के पेड़ों की पंक्तियां, झरबेरी के जंगल, कोठी का बाग, कमल के पत्तों से भरे हुए कमला नदी के गड्डे।" हालांकि, मेरीगंज का यह केवल एक पहलू है। इसका दूसरा पहलू बड़ा ही विषम और हृदयद्रावक है। यहां के लोग सुबह को बासी भात खाकर, पाट धोने के लिए गन्दे गड्डों में घुसते हैं और करीब सात घंटे तक पानी में रहते हैं। गन्दे गड्डों को देखने से ऐसा लगता है कि पानी के आध इंच धरातल की जांच करने पर एक लाख से ज्यादा मच्छर के अण्डे जरूर पाए जाएंगे।

"...किंतु यहां के मच्छर गड्डों में बहुत कम अण्डे देते पाए गए हैं.... इनका कोई–कोई ग्रुप तो इतना सफाई पसन्द होता है कि निर्मल और स्वच्छ तालाबों को छोड़ कर और कहीं अण्डे देता ही नहीं। और परिणामस्वरूप इन तालाबों के जल का सेवन करने वाले जब–तब मलेरिया से ग्रस्त रहते हैं।" यहां के लोगों के जीवन में अभावों की एक लम्बी श्रृंखला व्याप्त है। "इन मच्छरों से बचने के लिए डी.डी.टी. और मसहरी की बात तो बहुत बड़ी हुई, देह में कडुवा तेल लगाना भी स्वर्गीय भोग विलास में गण्य है।.... तेल–फुलैल तो जमींदार लोग लगाते हैं।... बस खेतों में फैली हुई काली मिट्टी की संजीवनी इन्हें जिलाए रखती है।" और, इस विषम अंचल के मध्य ही डॉ. प्रशांत एक नये जीवन को गढ़ने का सपना देखता है। वह सोचता है कि 'लाखों एकड़ बन्ध्या धरती, कोशी कवलित, मरी हुई मिट्टी शस्य श्यामला हो उठेगी। कफन जैसे सफेद बालू भरे मैदान में धानी रंग की जिन्दगी के बेल लग जाएंगे। मकई के खेतों में घास गढ़ती हुई औरतें बेवजह हंस पड़ेंगी। मोती जैसे सफेद दांतों की चमक...'। आलोचनात्मक संदर्भ में धारावाहिक में मूल औपन्यासिक कथा की भांति कई ऐसे प्रसंग हैं जहां निर्माता–निर्देशक ने काल्पनिक दृश्यों का प्रभावी संयोजन कर मूल पाठ को जीवंत व प्रभावी बनाने का सफल प्रयास किया है। धारावाहिक के उस दृश्य का संदर्भ का यहां विशेष रूप से उल्लेखनीय है जहां कालीचरन की तरह डॉ. प्रशांत का भी पक्का विश्वास है कि ये पूंजीपति और जमींदार खटमलों और मच्छरों की तरह शोषक हैं। और, इन्हीं के कारण एक विशाल जनसमूह उपेक्षा, प्रताड़ना और अभावों की जिन्दगी जीने के लिए विवश हुआ पड़ा है। ध्यातव्य है कि इस मैले परिवेश को चित्रित करने के लिए निर्माता–निर्देशक ने उस परिवेश के बीच जीने वाले लोगों के चरित्रों की, उनके क्रियाकलापों, विश्वासों व व्यवहारों की भरपूर सहायता ली है तथा इसको गहरा और वास्तविक रंग देने के लिए उसने वहां के सामान्य जन जीवन के अनेक आदतों, व्यवहारों और घटनाओं की काल्पनिक लेकिन प्रभावी संयोजना की है। उसकी इस संयोजना में वास्तविकता के रंग भरे गए हैं जिससे आंचलिक जीवन का वास्तविक संयोजन सफल हो सका है। वैसे आंचलिक जीवन के संयोजन में उपन्यासकार फणीश्वरनाथ रेणु ने लोक–सांस्कृतिक तत्वों को वहां के उत्सवों और लोकगीतों द्वारा प्रस्तुत किया है। उदाहरण के तौर पर डॉक्टर को 'बिपादत' नाच दिखलाया जाता है। तब मृदंग पर 'चलन्त' बजता है। बिकटा (विदूषक) आता है। मृदंग, करताल और झाल के स्वरों के बीच अपनी फूहड़ और विदूषकी भाषा से वह लोगों (दर्शकों) का मन मोह रहा है। मृदंग पर स्वर तैरने लगते हैं–

"आहे! उत्तरहि राज से आयेल हे नटुकवा कि आहे मैया
कि आहे मैया सरोसती है परथमें बन्नोनि हे तोहार!
... हम हूं मूरख गंवार कि आहे मैया,
सरोसती, भूलल आखर जोड़िके आहे मैया,
कंठे लीहै हे बास।''

और, यह 'बिपादत नाच' देखकर डॉ. प्रशांत सोचता है कि कोमल गीतों की पंक्तियों के अपभ्रंश शब्द भी कितने मधुर लगते हैं। "..... ...पिया भइले डुमरी के फूल रे पियवा भइले।... चांद बयरि भेल बादल, मछली बयरि महाजाल, तिरिया बयरि दुहु लोचन– रिदये के भेद बताएं।" महंगी हो अथवा अकाल, होली का उत्सव मानना ही पड़ेगा। फागुन महीने की बावरी हवा में लोगों के गले में बरबस ही गीत घुल जाते हैं–

"अरे बहियां पकड़े झकझोरे श्याम रे
फूटल रेसम जोड़ी चूड़ी

मसकि गई चोली,
भींगावल साड़ी
आंचल उड़ि जाये हो
ऐसी होरी मचायो श्याम रे...."

धारावाहिक में अपेक्षाकृत उत्सव एवं त्योहारों के साथ–साथ पारिवारिक और प्रेयस जीवन के चित्र भी लोक–गीतों में भरपूर ढंग से मुखर हुए हैं। उदाहरणस्वररूप जाट की प्रेयसी–पत्नी सास–ससुर से झगड़ कर उसकी अनुपस्थिति में नैहर चली जाती है। अपनी अतिशय सुन्दर जट्टिन को जाट खोजने जा रहा है–

"सुनरी हमर जटिनियां हो बाबूजी
पातरी बांस के धौकनियां हो बाबूजी।"

यही कारण है कि आलोच्य कथा साहित्य आधारित टेलीविजन धारावाहिक 'मैला आंचल' में ऐसे अनेक लोक–प्रसंगों का इन मनोहर गीतों के माध्यम से मिथिला के लोक–जीवन के माधुर्य का दर्शन होता है और वहां के अंचल को एक विशिष्ट भूमिका पर सार्थक अभिव्यक्ति मिल सकी है। साथ ही साथ मेरीगंज के परिवेश में विभिन्न व्यक्ति चरित्र भी रूपायित हुए हैं और ग्रामीण जीवन की गति के साथ–साथ ग्राम्य मानसिकता का भी अध्ययन किया गया है। पूरे गांव में जाति के आधार पर टोले बने हुए हैं। राजपूत टोली, ब्राह्मण टोली, कायस्थ टोली, यादव टोली के साथ–साथ गांव से बाहर बसे हुए शोषित संथालों की भी एक टोली है। इनमें परस्पर वैमनस्य है। संथाल टोली के पुरुष, स्त्री, बच्चे शेष सभी जाति वालों द्वारा शोषित और उपेक्षित हैं। प्रत्येक टोली का एक–एक सरगना है। राजनैतिक पार्टियों में कांग्रेस और सोशलिस्ट पार्टी के नेता यहां सक्रिय हैं। बालदेव बगुला भगत कांग्रेसी है। कपड़ा व चीनी के परमिट में वह बेईमानी करता है। कालीचरन सोशलिस्टों का नेता और संथालों का हमदर्द है।

गांव में मठ भी है। महन्त सेवादास और रामदास के किस्सों से धार्मिक आडम्बर का स्वरूप स्पष्ट होता है। लक्ष्मी कोठारिन इन महन्तों के लिए आकर्षण का विषय रही है। बाहर का लरसिंघदास भी यहां की महन्ती प्राप्त करना चाहता था। धन के अतिरिक्त लक्ष्मी के प्रति मोह भी इसका कारण था। एक जोतखी जी हैं, जिन्होंने गांव वालों को भाग्यवाद और अन्धविश्वासों के आंचल से बांध रखा है।

विकास एवं प्रगति का कोई भी चरण जोतखी के अभिशाप से मुक्त नहीं है। इसी प्रकार बाहर से आए डॉ. प्रशांत और बावनदास का चरित्रांकन भी ग्राम्य अंचल में 'जागृति–प्रवेश' के प्रतीक के माध्यम से हुआ है। गांव में विकसित हो रही नयी चेतना मलेरिया सेन्टर तथा चरखा सेन्टर खुलने के माध्यम से व्यक्त होती है। कमली और डॉ. प्रशांत के प्रेम के माध्यम से अन्ततः प्रेम का प्रतिबद्ध रूप ही प्रकट होता है। मंगलादेवी का चरित्र भी धीरे–धीरे बदलते हुए भारतीय नारी के परिवेश को गहराई से अभिव्यक्त करता है।

निष्कर्ष

सारतः मेरीगंज एक ऐसे आंचलिक परिवेश का प्रतिनिधित्व करने में सफल हुआ है जो सुप्तावस्था से धीरे–धीरे जागृत होकर नगरीय जीवन की सक्रियता को आत्मसात करने का प्रयत्न कर रहा है। वैसे मूल कृति के अनुरूप कथा के टेलीविजन संस्करण के प्रत्येक चरित्र में भी उसके निजीपन की प्रतिष्ठा हुई है, लेकिन इसका वैशिष्ट्य यह है कि ये सभी चरित्र सामूहिक रूप से परिवेश के महत्त्व को प्रतिष्ठित करते हैं। परिणामतः परिवेश प्रमुख हो जाता है और मुख्यतः धारावाहिक 'मैला आंचल' का कथ्य आंचलिकता के निरूपण को प्राथमिकता देता–सा दीखने लगता है। परिवेश और आंचलिकता की संप्रेषणीयता के निहितार्थ आलोच्य धारावाहिक 'मैला आंचल' की यही सबसे बड़ी उपलब्धि है।

सहायक संदर्भ ग्रंथ सूची:

- रेणु, फणीश्वरनाथ, मैला आंचल, 2011, तीसरी आवृत्ति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
- गुप्ता, ओम, मीडिया साहित्य और संस्कृति, 2002, कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली.
- चतुर्वेदी, जगदीश्वर एवं सिंह, सुधा, जनमाध्यम सैद्धांतिकी, 2002, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली.
- चतुर्वेदी, जगदीश्वर, टेलीविजन संस्कृति और राजनीति, 2004, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली.
- चोपड़ा, लक्ष्मेंद्र, मीडिया और समाज, 2006, आधार प्रकाशन, पंचकूला, हरियाणा.
- जोशी, पूरण चंद, संचार क्रांति और संस्कृति विकास, 2001, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, नई दिल्ली.
- जोशी, मनोहर श्याम, पटकथा लेखनः एक परिचय, 2013, चौथी आवृत्ति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
- वजाहत, असगर एवं रंजन, प्रभात, टेलीविजन लेखन, 2010, दूसरी आवृत्ति, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रा.लि., नई दिल्ली.
- जोशी, रामशरण, मीडिया विमर्श, 2008, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली.

डॉ. उमेश कुमार पाठक
संचार एवं पत्रकारिता विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय क्षेत्रीय केंद्र, खानियारा, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com